बुन्देलखण्ड का नवोदित प्रमुख तीर्थ नन्दपुर (नवागढ़) और वहाँ के कतिपय प्रमुख जिन प्रतिमालेख

- डॉ. कस्तूरचंद जैन 'सुमन' जैन विद्या संस्थान श्री महावीर जी

जैन तीर्थ नन्दपुर का नामोल्लेख अहार (टीकमगढ़ मध्यप्रदेश) के अतिप्राचीन संवत् 1237 के प्रसिद्ध तीर्थंकर शान्तिनाथ प्रतिमा के आसन पर उत्कीर्ण नागरी-लिपि और संस्कृत भाषा के प्रतिमालेख में मिलता है । प्रशस्ति नौ पंक्तियों में निज़्नप्रकार है ।

1. ओ नमो वीतरागाय ।।गृहपतिवंशसरोरुह सहस्त्ररश्मिः सहस्त्र-कूटै यः । वाणपुरे व्यधिताक्षीत्स्त्रीमानि-

2. देवपाल इति ।।1।। श्री रत्नपाल इति ततनयो वरेण्यः पुण्यैकमूर्ज़िरभ-वद्वसुहाटिकायां । कीर्तिर्ज्जगन्ति य

3. परिभ्रमणस्त्रमाज़ार्यस्यस्थिराजनि जिनायतनाच्छलेन ।।2।।

एकस्तावद नूनबुद्धिनिधिना श्री शान्तिचैत्यालय

4. यो दिष्ट्या नंदपुरे परः परनदानंदप्रदः श्रीमता । येन श्री मदनेससागरपुरे तज्जन्मनोनिर्ज़्मे सोयं श्रेष्ठि वरिष्ठ गल्हण इति श्री रल्हणज़्याद् ।।3।। भूत ।।3।। तस्मादजायत कुलाज़्बर पूर्ण्णचंद्रः श्री जाहडस्तदनुजोदयचंद्र नामा ।

5. ध सुदानसारः ।।4।। ताज़्यामसेशदुरितोघसमैक हेतुं निर्ज़्मापितं भुवनभूषण भूतमेतत् । श्री शान्तिचैत्यमिति नित्यसुखप्रदानात् ।

6. मुक्तिं श्रियो वदनवीक्षण लोलुपाज़्याम् ।।5। छ छ छ ।।
संवत् 1237 मार्ग्गसुदि 3 स्त्रीमत्परमाडिदेव विजयराज्ये

7. चन्द्रभास्कर समुद्रतारका यावदत्र जनचिज़हारकाः ।
धर्ज़्मकारिकृत सुद्धकीर्तनं । तावदेवजयतात्सुकर्तन ।।6।।

8. वल्हणस्य सुतस्श्रीमान रूपकारों महामतिः । पापटोवास्तुसाज्ज्ञस्तेन विंव सुनिर्ज़्मितं ।

भावार्थ

पद्य -1 - पंच परमेष्ठियों की वीतरागता के लिए नमस्कार हो। गृहपति वंश रूपी कमलों के लिए सूर्य के समान हुये श्रीमान् देवपाल ने वाणपुर नगर में एक सहस्त्रकूट चैत्यालय का निर्माण कराया ।

पद्य - 2- इनके पुत्र का नाम रत्नपाल था । वसुहाटिका नगरी में पवित्रता की प्रधान मूर्ति थे । इनकी कीर्ति तीनों लोकों में परिभ्रमण के श्रम से थककर जिनायतन के बहाने स्थिर हो गयी थी ।

पद्य - 3- रत्नपाल अपर नाम रल्हण के गल्हण नामक पुत्र हुआ । इसने नंदपुर नगर में शांतिनाथ चैत्यालय तथा दूसरा चैत्यालय अपने जन्मस्थान मदनेशसागरपुर वर्तमान अहार में बनवाया गया था ।

पद्य-4- श्रेष्ठी गल्हण के दो पुत्र हुए जाहड और उदयचंद। इनमें जाहड कुलरूपी आकाश के लिये पूर्णचन्द्र थे और उदयचंद परोपकारी, धर्मात्मा और दानी थे।

पद्य-5- इन दोनों भाईयो ने सज़्पूर्ण पापों की शान्ति हेतु, पृथिवी के भूषणस्वरूप सुखप्रदायी होने से मुक्तिरूपी लक्ष्मी के मुखावलोकन के लिए श्री शान्तिनाथ तीर्थंकर की प्रतिमा निर्मित कराई थी।

पद्य-6- प्रतिमा संवत् 1237 मार्ग सुदि तृतीया शुक्रवार के दिन प्रतिष्ठित हुई । उस समय श्रीमान् परमर्द्धिदेव का राज्य था। कहा भी गया है कि जब तक चन्द्र, सूर्य तारे, समुद्र मनुष्यों के चिज़हारी हैं तब तक धर्मकारियों का सुक्रीर्तिमय यह सुकीर्तन विजयी रहे । प्रतिबिज़्ब बल्हण के पुत्र वास्तुशाज़ के ज्ञाता पापट थे।

इस प्रतिमालेख में आलोक में दो ऐतिहासिक नगर पढ़ने में आये हैं-वाणपुर और नन्दपुर । इनमें वाणपुर टीकमगढ़ से मात्र ग्यारह किलोमीटर दूर पश्चिम में विद्यमान है जहाँ सहस्त्रकूट रचना के दर्शन आज भी सुलभ है।

नन्दपुर के सन्दर्भ में वयोवृद्ध विद्वान श्री पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' से ईसवी 1993 में ज्ञात हुआ था कि यह नगर झाँसी से सोजना मार्ग से सोजना से चार किलोमीटर उज़र पूर्व कोण में नाबई नाम से प्रसिद्ध है।

अहार प्रतिमालेख में उल्लिखित नंदपुर नामक ही संभव नाबई नाम से भी प्रसिद्ध रहा है। नन्दपुर की दूरी भी अहार से संभवतः वाणपुर के समान ही निकटवर्ती

ही रही है । संवत् 1237 के पूर्व यह नगर जैन केन्द्र रहा प्रतीत होता है। जैन परिवार धार्मिक रहे हैं। उनकी धार्मिक प्रवृतियों को देखकर ही संभवतः यहाँ भी तीर्थंकर शान्तिनाथ चैत्यालय श्रेष्ठी गल्हण द्वारा निर्मित कराया गया था।

नन्दपुर (नवागढ़) के प्रतिमालेख

ब्र. जयकुमार जी 'निशान्त' नन्दपुर नामक तीर्थक्षेत्र के जीर्णोद्धार हेतु समर्पित हैं। प्रतिमा लेख पढ़ने के लिए उन्होंने पत्र भी लिखा किन्तु मैं वहाँ नहीं पहुँच सका ।

ब्र. निशान्त जी ने मेरे निवेदन पर नन्दपुर के प्रतिमालेखों के चित्र भेजे जिनके पढ़ने से निज्न जानकारी प्राप्त हो सकी है। प्रतिमालेख निज्न प्रकार हैं-

चित्र संज्या प्रथम संवत् 1202

इस चित्र में एक दूसरे को देखते हुए दो हरिण आगे का एक-एक पैर ऊपर उठाये हुए, मुँह खोले हुए चित्रित हैं। इस चित्र से अहार प्रतिमालेख में कथित श्रेष्ठी द्वारा नन्दपुर में शान्तिनाथ चैत्यालय पर बनवाया जाना प्रमाणित होता है।

चिन्ह की बायीं ओर इसी चित्र में निज्न अभिलेख भी हैं- पं. 1 (सं) 1202 गोला पं. 2 पूर्ज्व अन्व (अन्वे) भ्राता (काता) पं. सलदेसल । चिन्ह हरिणों की दायीं ओर पं. 1 साबु काकेनस सुत पं. 2- त साबु (साह) आसल

प्रस्तुत प्रतिमालेख से यह भी ज्ञात होता है कि यह वही नगर है जिसका अहार शान्तिनाथ प्रतिमालेख में नन्दपुर नाम आया है ।

चित्र संज्या द्वितीय -संवत् 1202

इस चित्र के ऊपरी भाग में छत्र सहित क्रमशः तीन शीर्ष भाग मात्र अंकित है। नीचे चार पंक्ति का अभिलेख उत्कीर्ण हैं-

पं. 1- (अर) य वि नाभि वाजेन कुन्तो

पं. 2- गोलापूर्व्वान्वये - (वि)

पं. 3 - दिसा- तस्य पु..

पं. 4 - संवत् 1202 (अपठनीय)

चित्र संज्या तृतीय संवत 1203

यह अभिलेख सिर विहीन पद्मासन मुद्रा में ध्यानस्थ प्रतिमा की आसन पर नागरी लिपि और संस्कृत भाषा की दो पंक्तियों में उत्कीर्ण है ।

पं. 1 - संवत् 1203 आषाढ़ वदि 10 गोला

पं. 2 - पूर्व्व अन्वे सावु (साव) सल सुत बल्हण

यही दो पंक्ति का लेख मानस्तज्भ की सर्वांग विभूषित ध्यानस्थ पद्मानस्थ प्रतिमा की आसन पर उत्कीर्ण मिला है ।

चित्र संज्या चतुर्थ

बांह सिर विहीन महावीर प्रतिमा

पद्मासन मुद्रा में ध्यानस्थ खण्डित इस प्रतिमा की आसन पर बायीं ओर पूँछ उठाये मुँह फुलाये विपरीत दिशा में मुँह किये चिन्ह स्वरूप सिंह उत्कीर्ण हैं। मध्य भाग अलंकृत है । उसकी दोनों ओर एक पंक्ति का अभिलेख निज्न प्रकार उत्कीर्ण हैं

सं 1195 गोलापूर्व्वान्वये साधु महिचंद भार्या तिसुदि (अलंकरण) तत्सुत

साधु देल्हण वधू बीलामामी सल्हा एते

चित्र संज्या पंचम- पार्श्वनाथ प्रतिमा

पद्मासन मुद्रा में ध्यानस्थ प्रतिमा के सिर पर नौ संज्यक दर्शाये गये हैं। सर्प का आकार प्रतिमा की आसन से आरज्भ हुआ है। केश भी प्रदर्शित हैं । नेत्र, नासिका, ओष्ठ, सौज्य हैं। कर्ण स्कन्धों से जुड़े हैं। वक्षस्थल उभरा हुआ है । प्रतिमा चौकोर आसन पर विराजमान है । आसन पर बायीं ओर पद्मावती शासनदेवी है । इसका सिर सर्प फण से विभूषित है । दूसरी ओर धरणेन्द्र देव पद्मासनस्थ हैं ।

धरणेन्द्र और पद्मावती के निकट नागरी लिपि तथा संस्कृत भाषा में निज्न अभिलेख है। इसके दो भाग हैं । प्रथम भाग तीन भागों में विभाजित है - (1) श्री पारीख (2) तीर्थ का प्र. (3) ती मा 8 ।।

द्वितीय भाग (दायीं ओर) सकें (शक संवत्) 1586 को (2) मी गजमती वा (3) 3

संभवत् यह प्रतिमा गजमतीवाद के द्वारा प्रतिष्ठित कराई गई थी ।

चित्र संज्या षष्ठ चरण युगल

चरण तले दो पंक्ति का नगरी लिपि संस्कृत भाषा का निज्न लेख है-

1. भट्टारक पद्म देव 2. प्रणमंति

चित्र संज्या 65 ए (सप्तम्)

ऊपरी भाग में पायल से विभूषित दो चरण मात्र हैं। इनके नीचे दो पंक्ति का लेख है-

(1) सावु वील्हा तस्य सुत ल्सम (2) अंविका प्रणमति ।।

चित्र संज्या अष्टम् - अर्हत् प्रतिमा संवत 1203

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में ध्यानस्थ है । कर्ण स्कन्धभाग से जुड़े हैं। आकृति धूमिल है । आसन पर दो पंक्ति का लेख है -

(1) संवत् 1203 आषाढ वदि 10 गोला

(2) ला पूर्व्व अन्वे सावु रासल सुत संति

नोट - चित्र संज्या तीसरे का और यह लेख दोनों समान है ।

चित्र संज्या नवम्

यह चित्र किसी शासन देव का है । इसके दायें हाथ में गदा आयुध प्रतीत होता है। बायाँ पैर मुड़ा हुआ है । नीचे आसन पर दो पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है-

(1) संवत् 1203 असाढ़ वदि 10 गोलापूर्व अ

(2) न्वे सावु रामचंद सुत बालु

प्रस्तुत प्रतिमालेखों से नन्दपुर गोलापूर्वान्वयी श्रावकों की आवासभूमि रही ज्ञात होती है । यहाँ के जैन श्रावकों के अहार क्षेत्र सज्बन्ध भी रहे प्रतीत होते हैं। बुन्देलखण्ड में नन्दपुर अन्य क्षेत्रों के समान आदरणीय धार्मिक क्षेत्र रहा है ।

Navagarh: Antiquities from the Chandel period

Dr. Yashwant K. Malaiya,
Professor of Computer Science, Colorado State University

[Navagarh is a Jain Pilgrimage site that has developed only since 1959. It has significant Pre-historic and historic remains that have received attention only in recent years. This article discusses on the Jain antiquities of the Chandel period as well as a few that may from the early middle age.]

Its history during the Chandella period needs to be studied in conjunction with the antiquities of nearby sites, specifically Badagaon-Dhasan, Aahaar Kshetra and Papora ji, which are also pilgrimage centers as well as Bhelsi, which is mentioned by Naval Shah Chanderia's **Vardhamana Purana** in the sixteenth chapter. It is located at the Navai village, about 8 km from Sojna in central India in Uttar Pradesh, Just across the border from Madhya Pradesh.

The ancient cite was noticed as a collection of sculptures and fragments on top of a platform. The site was explored by Pt. Gulabchandra Pushpa, anAyurvedic physician (later famous as a Pratishthacharya) in 1959. The platform was actually the top of an underground chamber which concealed a beautifully polished sandstone image of 18th: Teerthankar Bhagwan Arahnatha in the kayotsargpose.

A modern temple was later constructed at the same exact spot, with the garbhagriha left underground the same spot. A congregational room was excavated infront of it.

In Bundelkhand, several underground chambermed Bhonyras with concealed Chandella period images have been found. According to Balbhadra Jain these are said to be seven which include Pava, Deogarh, Seron, Karguvan, Bandha, Papora. Thuvon.

Navagarh should be included among them since underground structure has been carefully preserved.